मनसा सेवा - 84

अव्यक्त बापदादा :- (20/02/2001)

➳ _ ➳ अभी दु:खी दुनिया को मुक्तिधाम मे जीवनमुक्ति धाम मे भेजो। बहुत दुखी है ना तो रहम करो, अब दु:ख से छुडाओ। जो बाप का वर्सा है - 'मुक्ति' का, वह सबको दिलाओ क्योंकि परेशान बहुत हैं। आप शान मे हो, वह परेशान हो। **कभी भी मन्सा सेवा से अपने को अलग नही करना, सदा सेवा करते रहो। वायुमण्डल फैलाते रहो। सुखदाता के बच्चे सुख का वायुमण्डल फैलाते चलो।**

➢➢ बाप का वर्सा है - 'मुक्ति'

➳ _ ➳ आत्माओ को मुक्त करना है क्योंकि आत्माएं परेशान है

→ अज्ञान के कारण

→ **स्वयं को भूले है**

→ **competition और comparison के कारण**

→ दूसरो के सुख से भी दुखी है

→ संसार मे दुख बहुत है अशांति बहुत है अपवित्रता बहुत है

→ आत्मायें दुख मे डूबी है और वो खुद भी जानती है कि हम इन इन कारणों से दुखी है

- पर शक्ति नही है

→ वो ये भी जानती है कि ये पाप है

- पर उससे मुक्त नही हो सकती

→ वो ये भी जानती है कि ये गलत है व नही करना चाहिए

- पर वो न करने की पावर उनमे नही है

➳ _ ➳ ऐसा कोई शायद ही है जो नही जानता जो वो कर रहा है वो गलत है

→ परंतु एक तरफ अंहकार है जो ये स्वीकार नही करने देता कि हम भी गलत हो सकते है

- अंहकार स्व की रक्षा करता है अस्वीकार करके, दूसरो को दोष देकर के या श्रीमत को अस्वीकार करके

→ ये जो पाप का भाव है विकर्म का ये हर आत्मा को अनुभव है

- उसकी वजह से आत्मग्लानी का भाव बहुत ज्यादा है

→ एक है किसी को पता नही ये पाप है

→ दूसरी ये अवस्था जिसको सब पता है ये पाप है

- परंतु अंदर अंहकार पुराने स्वभाव धारणाओं की कमी शक्ति की कमी ये सारी चीजो से मुक्त नही हो रहा

→ संसार की आत्माये बहुत दु:खी है हमे उन्हे मुक्ति देनी है

➳ _ ➳ **<u>भगवान कहता है मै तीन चीजे करने आता हूं</u>**

→ साधुओं का उद्धार

→ पाप का नाश

→ धर्म की स्थापना

➢➢ हमें आत्माओं को किन किन बातों से मुक्त कराना है ??

➳ _ ➳ दुख से अशांति से

→ एक पल को भी शांत नही है

→ बाहर की जितनी खोजे है जितने भी साइंस के साधन है उसमे इतनी involvement क्यूं है

→ **<u>क्योंकि अंदर रिक्तता है खाली पन है उसको भरने का प्रयास मात्र है वो सारे साधन</u>**

- वो न मिले तो प्रतिकिया क्रोध की होती है

→ **<u>अंदर की रिक्तता तब पूर्ण होगी जब उस परम से उसे भरा जाए</u>**

- हदों से भरकर वो कभी भर नही सकता

→ **<u>जब तक आत्मा पर से नही निकलती तब तक वो रिक्तता रहेगी</u>**

➳ _ ➳ संसार की आत्माओं को दुख से अशांति से भय से मुक्त करना

→ आत्मा भयभीत है अज्ञात से

- लंगड़े आदमी को देखता है तो लगता है मैं न हो जाऊं
- अंधे आदमी को देखता है तो लगता है मैं न हो जाऊं
- बिमार आदमी को देखता है तो लगता है मुझे बीमारी न आ जाए

→ जो जो दिखाई देता है लगता है मेरे साथ होगा

→ परंतु लोग समझाते है तुम्हारे साथ ऐसा नही होगा

→ परंतु ये समझाना उसे भय से मुक्त नही करता

- उसके भय को और बढाना है

→ **व्यक्ति को समझाना यही है सब होगा जो तुम सोच रहे हो नही होगा वो भी होगा**

→ **यही विधि है सत्य का सामना करना**

→ भय से मुक्त होने की विधि पलायनवाद नही है उसका सामना करना है

→ देखना उसको आंखो मे आंखे डालकर कौन सी चीजे हमे भयभीत करती है

- तो वो भाग जायेगी
- वो हमसे डरने लगेगी

→ **हम महाकाल है भूतनाथ की संतान है**

- भूत हमसे डरे हम भूतो से नही डरे।

→ भय से मुक्ति की विधि है भय को देखना

→ लोग उससे भागते है भागना नही है वही करना है जिससे डर लगता है

➳ _ ➳ असुरक्षा का भय

→ भय से जुडा हुआ है

→ असुरक्षा का भय, हर चीज मे असुरक्षा, स्थान की पद की असुरक्षा

➳ _ ➳ भक्ति के कर्मकांड का भय

→ भक्ति मे भटकना

→ साधुओ की शरण मे जाना

→ पूजा पाठ

→ **गुरू के श्राप का डर**

→ अलग अलग गुरू करना

→ अलग संस्थायें अलग अलग तीर्थ एक से निकल कर दूसरे मे ऐसे भटकते रहते है

- भटकने से मुक्त करना ये हमारा कर्तव्य है

➠ _ ➠ व्यसनों विकारो से मुक्त करना

→ व्यसनों मे इतने गहरे घुस गए है उनमे एक है इन्टरनैट

- नेट का addiction ये जाल है

→ **जितने साधन वरदान भी है तो श्राप भी है**

- additions को चेक करना है

- टी काफी चॉकलेट किसी चीज का addiction है पर जिसको है वो मानता ही नही है कि है

→ **कोई भी चीज की अति मे जाना addiction है व उस समय पर न मिले तो बैचेनी**

- ये addiction है

→ **योगी की अवस्था जितनी सूक्ष्म होती जाती है ये स्वत: छूटते जाते है**

➢➢ संयम

➠ _ ➠ **संयम साधना का एक अभिन्न अंग है**

→ संयम की कोई लिमिट नही है जितना छोडना चाहूं छोड सकता हूं

→ **आत्म संयम की कोई सीमा नही है भोग विलास की सीमा है**

- कितना भोगेगा कितना खायेगा

→ **जिसे साधना के पथ पर आगे जाना है तो उसे संयम को धारण करना पडेगा**

→ ये नही दूसरो को सीखाने के लिए स्वयं उसका स्वरूप बनने के लिए

→ **जब स्वरूप बनेगे तो स्वत: ही वो गुण दान हो जायेगा**

→ आत्माओं को मुक्त करना है

- अशांति से भोग से दुख से उदासी से नेगेटिव से

■ उनका विलासिता का जो जीवन है अंदर से उसके प्रति वैराग आ जाए घृणा भाव हो जाए

■ जो चीज को पकडे हुए है उसके ऐसे छोड दिया व दूसरो को वैसा करते देख घृणा हो

→ **आत्म नियंत्रण करना है देखना है अपने आप को कि कर सकता हूं मै**

→ आत्म बल है कितनी हमारे अंदर कर सकते है

→ ऐसे नहीं समय पर देखेगे तब समय शिक्षक होगा

→ **छोडने के लिए एक संकल्प काफी है एक संकल्प छोडा ऐसे कि बस संकल्प लिया फिर कभी मुडकर ही नही देखना**

■ **महान आत्मायें एक बार प्रतिज्ञा करते है**